समाजिक परिवर्तन के संकेत

डॉ. दिप्ती केशरी

मध्य विद्यालय देवधारी

Mobile No- 9160818580

E-Mail diptikeshri20@gmail.com

शोध सारांश

साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला है । समाज के किसी भी क्षेत्र में होने वाले विचलन को हम सामाजिक परिवर्तन कह सकते हैं । उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का साहित्य आज भी हमारे समाज में परिवर्तन के लिए प्रेरणा का संचार करता है । उन्होंने राष्ट्र के निर्माण के लिए जो सपना देखा था उसे लक्ष्य तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है । जाति और धर्म आधारित भेदभाव को दूर कर ही हम अपने समाज की अनेक प्रकार के खाइयों को पाट सकते हैं । परिवर्तन वस्तु, विषय अथवा विचार में इस समय के अंतराल से उत्पन्न हुई भिन्नता को कहते हैं । परिवर्तन होना एक अवश्यंभावी क्रिया है क्योंकि यह प्रकृति का नियम है संसार में कोई भी पदार्थ स्थिर नही रहता उसमें कुछ ना कुछ परिवर्तन सदैव होते रहते हैं । स्थिर समाज की कल्पना करना आज के युग में संभव नहीं है समाज में शाति स्थापित करने के लिए परिवर्तन एक आवश्यक क्रिया है ।

वास्तव में परिवर्तन एक व्यापक प्रक्रिया है । समाज के किसी भी क्षेत्र में होने वाले बदलाव को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है । परिवर्तन से अभिप्राय समाज के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि किसी भी क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन से है। गिडिंग्स के मतानुसार, "समाज स्वयं एक संघ है, संगठन है, व्यवहारिक संबंधों का योग है, जिसमें भाग लेने वाले व्यक्ति एक, दूसरे से बँधे रहते हैं ।"[1]

आधुनिक हिंदी शब्दकोश में परिवर्तन शब्द का अर्थ दिया है, "सुधार या बदलाव ।"[2] स्वतंत्रता प्राप्ति के कारण गाँव–गाँव में आये हुए परिवर्तन धारा संबंधी डॉ. प्रेम कुमार का मानना है कि "भारत के महानगरों से लेकर कस्बों और गाँवों में एक संक्रमणकालीन स्थिति है और सभी स्थानों पर काम संबंधी पुराने मूल्य या तो टूट रहे हैं या परिवर्तित हो रहे हैं ।"[3]

स्वतंत्रता के पश्चात् अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन किए तथा विभिन्न समाजों ने अपने–अपने तरीके से इन परिवर्तनों को स्वीकार किया । इस काल में हमारे समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार ने जनमानस को जागृत किया । जहाँ अस्तित्व के प्रति हर कोई सजग हो चुका था । वहीं समाज में व्याप्त सामाजिक रूढ़ियाँ, नैतिक मान्यताएँ, और परंपरागत मूल्यों में भी परिवर्तन आने लगे थे । अंधविश्वासों के नाम पर लोगों कों गुमराह करने का क्रम अब कम हो चुका था ।

परिवर्तन समाज के नव निर्माण में सहायक होता है । जो कमियों को उजागर करने के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करता है । साहित्य समाज के यथार्थवादी रूप को चित्रित कर समाज सुधार का चित्रण और समाज के प्रसंग को जीवंत अभिव्यक्ति के द्वारा समाज के नवनिर्माण का कार्य करते हैं ।

सुधाकर आशावादी ने अपनी कहानियों में समाज में आए हुए पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के परिवर्तनों को अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण से परख कर प्रस्तुत किया है । स्त्री और पुरुष जाति की मानसिकता में होने वाले परिवर्तन ने व्यावहारिक सिद्धांतों में भी पर्याप्त परिवर्तन कर दिया है । समाज में हो रहे परिवर्तन ने परिवार को भी अपने साथ

अछूता नहीं रखा क्योंकि परिवार समाज का मुख्य केंद्र बिंदु है । परिवार से ही समाज का निर्माण होता है । अतः समाज में हो रहे परिवर्तन के कारण समाज के पुराने पर्दे, संस्कारों, मूल्यों, परंपराओं में भी तीव्र गति से परिवर्तन ने पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–बहन के रिश्ते–नाते आदि सभी रक्त संबंधों में परिवर्तन किए ।

परिवार का मुख्य आधार स्तंभ स्त्री है । अतः स्त्री हेतु स्वयं को पहचान दिलाने एवं अपने अस्तित्व की रक्षा करना आवश्य हो जाता है । नारी अस्तित्व की तलाश में पारीवारिक जीवन में मूलभूत रूप से परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न की है जिससे नर–नारी के दांपत्य जीवन में भी अनेक परिवर्तन आए हैं इस संबंध में डॉ. कुसुम अंसल का कहना है– "शिक्षा और नई चेतना से स्त्री को एक नई दिशा प्राप्त हुई है जिसके परिणामस्वरूप दांपत्य जीवन संबंधी परंपरागत नैतिक मान्यताएँ शिथिल होती जा रही है। एक निष्ठता (पति ही परमेश्वर है) की मांग अब अनुचित प्रतीत होती है ।"[4]

"युग–युग'' से चली आने वाली द्वितीय श्रेणी की स्त्री ने अपने को उत्पीड़न प्रक्रिया से उभारकर अपनी आवाज को ही बुलंद नहीं किया है, अपना स्थान भी तलाशा है । उसने स्त्रीत्व का नया रूप गढ़ा है, पत्नीत्व का, प्रेमिका का यहाँ तक कि मातृत्व का भी नया रूप सामने रखा है । प्रणय, पति, परिवार और प्रेमी सबको अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है ।"[5] "कुछ अपने पल" के अंतर्गत प्रेरणा एक विधवा स्त्री है तथा वह रजत की मृत्यु के उपरांत उसके संपूर्ण सपने को साकार करने हेतु उसके कार्य संस्थान को सुचारू रूप से संचालित करती हुए कहती है– "यदि पुरानी परंपराओं का बिना किसी तर्क या विवेक के पालन करते रहेंगे तो समाज में नयापन कैसे आएगा, सदियों से समाज ने पुरानी परंपराओं को त्याग कर नयेपन का आविष्कार करने का बीड़ा उठाया है, तभी हम समृद्ध हो रहे हैं...।"[6]

सुमित जी ने अपना पक्ष प्रबलता से प्रेरणा के सम्मुख रखा तथा उसे संस्थान में कार्य करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा– "खुली हवाओं में पाश्चात्य विकृति ने अपना वर्चस्व इसी प्रकार तो स्थापित किया सीधे हमारे घरों में घुसकर हमारे अंतस्थ में उतरने लगी है । हम अपनी पावन संस्कृति को भूल गए हैं । जहाँ राधा का निश्छल प्रेम और भक्ति का सागर स्वयं में जनमानस को डूबने पर विवश करता है । वहीं अपने घर की आत्मीय संस्कृति को त्यागकर पाश्चात्य जूठन को चाटने में हम स्वयं को कितना गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं । आज की युवा पीढ़ी, इस संस्कृति के कारण ही देहजनित अनेक बीमारियों से त्रस्त है तथापि विकृति ओढ़ने की जैसे सभी में होड़ सी लगी हो । अपनी संस्कृति के पतन में हम भी कम दोषी नहीं हैं । हम ऐसे उदाहरण ही समाज के सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर पाते, जो अनुकरणीय हो तथा आत्म संस्कृति के ध्वजवाहक हो ।"[7]

'पलायन' कहानी भी समाज में हो रहे पाश्चात्य शैली के अंधानुकरण को अपनाए जाने के कारण समाज किस दिशा में जा रहा है यह व्यक्त करता है । अनुराग बाबू कहते हैं– "तुम ठीक कहते हो... फर्ज तो है... मैं भी समझता हूँ, मगर वर्तमान पीढ़ी भावनात्मक संबंधों को ढोना नहीं चाहती... उनका लिविंग स्टाइल बदल चुका है, पुराने कड़ियो की छत के मकान उन्हें नहीं सुहाते, रसोई में चटाई बिछाकर भोजन करना उन्हें अच्छा नहीं लगता, अब तुम ही बताओ, मैं भावनात्मक संबंधों का साथ दू या अपनी संतानों का ।"[8]

'औरत का भूगोल' कहानी पुनः यह विचार करने, सोचने और विमर्श करने पर मजबूर करती है कि उर्मी इस कहानी की कैसी स्त्री पात्र है जो यह जानती है कि निखिल विवाहित है तथा उसकी एक पुत्री है फिर भी वह निखिल की ओर आकर्षित हो जाती है । उसकी चाहत निखिल के प्रति इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वह उसके दांपत्य जीवन को ही महत्वहीन समझने लगती है । वह बिना फेरे तथा विवाह के ही उसे अपना पति मान कर स्वयं को उसकी अर्धांगिनी स्वीकार लेती है । यह भावना स्पष्ट करती है कि आज स्त्री स्वयं को इतनी आत्मनिर्भर बना चुकी है कि वह समाज के नियमों, परंपराओं की उपेक्षा कर स्वयं की शर्तों पर जीवन जीना अधिक श्रेष्ठकर मानने लगी है ।

'मकान खाली है' कहानी के अंतर्गत भी गरिमा के शब्दों के माध्यम से हम समाज में आ रहे परिवर्तन एवं चेतना को अनुभव कर सकते हैं। जब कजरी के द्वारा सेठ सुखदेव को अपना बच्चा न देने पर गरिमा कहती है। "मैं सही कह रही..... कजरी महान् है... यदि यह संसार में मुखर होकर तुम्हारा बच्चा जन सकती है, तो क्या तुम इसे पत्नी के तौर पर स्वीकार नहीं कर सकते...।"[8] वर्तमान में गरिमा जैसी स्त्री के विचारों से ही समाज में चेतना का संचार होता है। आवश्यकता है पुरुष मानसिकता को परिवर्तित करने की जो पुरुष की सोच से ही संभव है। तभी समाज में सामाजिक परिवर्तन लाकर चेतना का संचार हो सकता है।

'कागज पर खुशबू' कहानी के अंतर्गत सुयश और सुलक्षणा दोनों ही चिकित्सकीय कार्य में संलग्न थे। जहाँ चिकित्सा क्षेत्र में भी पैसे को लेकर के लोग आज चिकित्सा को भी व्यवसाय मानकर गरीब और अमीर सभी को लूट रहे हैं वहीं सुयश और सुलक्षणा गरीब रोगियों की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देते हैं। एक दिन सुलक्षणा घर पहुँची तो द्रवित होते हुए सुयश से कहा, "सुयश ईश्वर ने हमें यह शरीर किसी विशेष उद्देश्य से दिया है। हम चिकित्सक हैं, सो हमारा कार्य भी रोगियों का उपचार कर के उनके स्वास्थ्य की रक्षा करना है। क्यों ना कोई बड़ा संकल्प लेकर उस संकल्प को जीवन भर के लिए धारण करें।"[9]

सुलक्षणा कहती है "सोच लीजिए... प्रत्येक संकल्प त्याग की अपेक्षा करता है। इसके लिए हमें अपने भौतिक एवं दैहिक सुखों का त्याग करना पड़ सकता है।... मैं चाहती हूँ कि निशक्त एवं असहाय रोगियों की सेवा में हम अपने स्वयं को भूल जाएँ।"[10] आज वर्तमान समाज में जब सभी लोग अपने ही स्वार्थ से परिपूर्ण है और एक–दूसरे के साथ संबंध भी अपनी स्वार्थ सिद्धी हेतु जोड़ते हैं। ऐसे में यह दोनों भी अपने चिकित्सा व्यवसाय से काफी धन अर्जित कर सकते थे परंतु उनका त्याग एवं दूसरों की सहायता करने का यह संकल्प वाकई में सामाजिक परिवर्तन का ही शुभ संकल्प है।

निष्कर्षः

अतः कह सकते हैं आज व्यक्ति के रक्त–संबंध सभी एक– दूसरे से विलग हो चुके हैं। प्रत्येक व्यक्ति एकल जीवन जीना चाहता है तथा अपने ही बारे में अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु ही सोचता है। सामाजिक परिवर्तन का नाता किसी विशेष व्यक्ति या समूह के विशेष भाग तक नहीं होता है। वे ही परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन कहे जाते हैं जिनका प्रभाव समस्त समाज में अनुभव किया जाता है। आधुनिक समाज में सामाजिक परिवर्तन न तो मनचाहे ढंग से किया जा सकता है और न ही इसे पूर्णतः स्वतंत्र और असंगठित छोड़ दिया जा सकता है। आज हर समाज में नियोजन के द्वारा सामाजिक परिवर्तन को नियंत्रित कर वांछित लक्ष्यों की दिशा में क्रियाशील किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1) प्रो. मुंशीलालः समाजशास्त्र, पृ. सं.2
2) सं. डॉ. गोविंद चातकः आधुनिक हिंदी शब्दकोश, नई दुनिया, तक्षशिला, 1986, पृ. सं.334
3) डॉ. प्रेम कुमारः समकालीन हिंदी उपन्यास, अलीगढ़ इंदु प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1983, पृ. सं. 50
4) डॉ. कुसुम अंसलः आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर, नई दिल्ली, अभिव्यंजना प्र. प्रथम संस्करण 1993, पृ. सं.225
5) वही, पृ. सं.225
6) डॉ. सुधाकर आशावादी, एक और युद्ध, कामाक्षी, संस्करणः 2010 निरुपमा प्रकाशन, मेरठ, पृ. सं.13
7) वही, पृ. सं.13

8) डॉ. सुधाकर आशावादी, बिना नींव का रंगमहल पृ. सं.40

9) डॉ. सुधाकर आशावादी, एक और युद्ध, मकान खाली है, संस्करणः 2010 निरुपमा प्रकाशन, मेरठ, पृ. सं.45

10) सुधाकर आशावादी, कागज पर खुशबू-, संस्करण: 2015 निरुपमा प्रकाशन, मेरठ, पृ. सं. 15

11) वही, पृ. सं. 16